युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह

18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2021

प्रेस विज्ञप्ति

24 सितम्बर, 2021 गोरखपुर। गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के 7वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आज सातवें दिन 'राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज श्रद्धांजलि सभा' की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने कहा कि आज हमारे पूज्य गुरूदेव की पुण्यतिथि है। इस अवसर पर हम उनके आदर्शो से, उनके उस विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्व से अपने को प्रेरणा प्राप्त करें, इसलिए यह आयोजन होता है। उन्होंने न केवल गोरखपुर पूर्वांचल या प्रदेश अपितु देश के उन समस्त योगीजनों के लिए जिन आदर्शो व मूल्यों को रखा वह हमारे लिए अत्यन्त प्रेरणा देने वाला है। गोरक्षपीठ के जिस विकास की नींव महन्त दिग्विजयनाथ जी ने रखी, उसको आगे बढ़ाते हुए पूज्य गुरुदेव ने गोरक्षपीठ का जो स्वरूप व मानदंड स्थापित किया, वह हमारे लिए अत्यन्त प्रफुल्लित करने वाला है। उनका कार्य समाज के प्रत्येक तबके के सम्मान व विकास के लिए रहता था। 1932ई0 में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना, महिला शिक्षा के लिए महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कॉलेज की स्थापना, योग संस्थान की स्थापना, पॉलिटेक्निक कॉलेज की स्थापना स्वास्थ्य के लिए आयुर्वेद चिकित्सालय की स्थापना हो ये सभी कार्य उन महापुरुषों के सत-संकल्पों व भविष्य दर्शन की क्षमता को प्रदर्शित करता है। आज सम्पूर्ण विश्व में योग को जो महत्व मिला है, यह हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रयास से सम्भव हो पाया है। उस योग परम्परा तथा शिक्षा स्वास्थ्य से सम्बन्धित गतिविधियों को गोरक्षपीठ हमेशा से करती चली आ रही है। आज हमारी संस्कृति व हमारी औषधियों को वैश्विक मान्यता मिली है। कोरोना

महामारी में पूरा विश्व भारत के ज्ञान-परम्परा व संस्कृति को अपनाया है। हमारी परम्परा में कहा गया है, श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् जो श्रद्धा रखने वाला व्यक्ति होता है, वही ज्ञान प्राप्त कर सकता है। हमे अपने महापुरुषों के प्रति श्रद्धा का भाव रखना होगा, तभी हमारे जीवन का कल्याण होगा। इन महापुरूषों का व्यक्तित्व, कृतित्व व आदर्श हमें अपने व्यावहारिक धरातल पर उतरने की प्रेरणा देता है। 1949ई0 में जब रामलला का प्रकटीकरण होता है, तो अयोध्या के कुछ गिने-चुने संत थे और उनको महन्त दिग्वियजनाथ जी का संरक्षण व नेतृत्व प्राप्त था। बाद में उसके आंदोलन को पूज्य गुरूदेव का संरक्षण व नेतृत्व मिला। आज भारत का डंका पूरे विश्व में इसलिए बजा है कि यहां के लोगो ने मोदी जी जैसा नेतृत्व देश को दिया। आज कुंभ को भी यूनेस्को ने मान्यता दी है। आज प्रदेश की जनता को भगवान श्रीराम, बुद्ध, कबीर व रैदास का प्रतिनिधि मानकर पूरे विश्व में सम्मान प्राप्त हो रहा है। भारत की अखण्डता के लिए एक शूल के रूप में धारा 370 को हमारे गृहमंत्री ने उखाड़ फेका। पहले की सरकारों में आतंकवादियों का महिमा मंडन हो रहा था। आज देश में संतो-महापुरूषों का महिमामंडन हो रहा है। आज गुरूदेव की 7वीं पुण्यतिथि पर गोरक्षपीठ से जुड़ी सभी संस्थाओं या सामाजिक संगठन सभी के लिए मैं कहूंगा कि हम हमेशा राष्ट्र रक्षा के लिए प्रयास करेंगे और गलत लोगो व नीतियों का विरोध करेंगे।

जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी महाराज ने कहा कि श्रद्धांजलि किसे कहते हैं? यह समझने के लिए हम गोरक्षपीठ की परंपरा को देख सकते हैं। पूर्व महंतद्वय ने भारतीय संस्कृति का विकास करने के लिए आवश्यक समझा कि भारतीय संस्कृति के आधार यह है कि- भगवान श्रीराम का मंदिर निर्माण हो यह परम आवश्यक है इसलिए मंदिर निर्माण उन दोनों महापुरुषों का प्रधान उद्देश्य रहा। आज उनके शिष्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज विक्रमादित्य महाराज की तरह देश व प्रदेश के सभी तीर्थों का विकास कर रहे हैं। यही संस्कृति का विकास है और यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी पूज्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज के लिए।

दिगम्बर अखाड़ा अयोध्या से पधारे महन्त सुरेशदास जी महाराज ने कहा कि पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी का जीवन हम सभी को सदैव प्रेरणा देता रहा है। वे और मेरे पूज्य गुरुदेव महन्त रामचन्द्र परमहंस अन्य संतो से मिलकर श्रीराम जन्म भूमि के आन्दोलन की अगुआई की। उनके आन्दोलन का ही परिणाम है कि 05 अगस्त को श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्रीराम जन्म भूमि पर मन्दिर निर्माण के लिए शिलान्यास किया।

रोहतक हरियाणा से पधारे अलवर राजस्थान से सांसद महन्त बालकनाथ जी महाराज ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने जीवन को चरितार्थ करने के लिए हमें कुछ और सीखने की जरूरत नहीं है अपितु इन्हीं पूज्य महापुरूषों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को अपने जीवन में हम उतार लें, तो हमारा जीवन सफल हो जायेगा। भगवान श्रीकृष्ण ने भी गीता में कहा है कि हमें अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए। यह समय युवाओं को कुछ कर गुजरने का समय है। हम सभी को इस अवसर पर संकल्प लेना होगा कि हम इन महापुरूषद्वय के पद चिन्हों पर चलकर अपने समाज व राष्ट्र को अपना योगदान देंगे। पूज्य योगी जी के नेतृत्व में जिस प्रकार से गोरखपुर व पूरे प्रदेश में विकास की लहर देख रहें हैं। वह पूज्य महन्तद्वय का आशीर्वाद ही है।

पूर्व सांसद डॉ. रामबिलासदास वेदान्ती जी ने कहा कि पूज्य दोनों संतो की भारत के सनातन जीवन मूल्यों के प्रति अपार श्रद्धा थी व सनातन धर्म तथा भारतीयता का अनुसरण ही उन्होंने जीवन भर किया। जिन कारणों से और जो कारक हिंदू समाज को कमजोर करने तथा समाज को विभाजित करने व भारत को कमजोर करने के माध्यम बनते थे उनका डटकर विरोध किया। पूज्य महंत अवेद्यनाथ जी महाराज गोरक्षपीठ के अपने गुरु परंपरा का निर्वहन करते हुए निरंतर 45 वर्षों तक गोरक्षपीठाधीश्वर के रूप में न केवल गोरक्षपीठ के भक्तों का तथा सनातन हिंदू धर्म के मूल्यों व आदर्शों को स्थापित किया वरन उसे एक नेतृत्व दिया तथा संकट के समय में भी एक योग्य मार्गदर्शक के रूप में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हरिद्वार से पधारे योगी चेताईनाथ जी ने कहा कि गोरक्षपीठ का उद्देश्य सेवा के साथ जुड़कर लोकमंगल के कार्यों को करते रहना ही है। पूज्य महाराज जी का जीवन दर्शन जो हमें सदाचार व सत्कर्तव्य के लिए नित्य प्रेरित करता रहता है। स्वच्छता की दृष्टि से गोरक्षपीठ के पूज्य संतों ने बहुत पहले से ही समाज में एक नए मापदंड

स्थापित किए और यही स्वच्छता कि अपनी दृष्टि उन्होंने अपने सारी संस्थाओं को दी। इस कोरोना महामारी में भी हम अपने महापुरुषों के प्रति इस प्रकार से भव्य कायक्रमों का आयोजन कर श्रद्धांजलि दे सकते हैं, इसका उदाहरण हमें इस तकनीकी सहयोग से होने वाले कार्यक्रम से मिलता है।

अयोध्या से पधारे रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने कहा कि मुझे पूज्य ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के जीवन को समीप से अनुभव करने का अवसर मिलता रहा। उनके नेतृत्व में गोरक्षपीठ रामलला के भव्य मन्दिर के निर्माण के लिए सबको साथ लेकर सतत प्रयास करता रहा। आज वर्तमान पीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में रामलला अपने भव्य मन्दिर में विराजमान हो रहें हैं। यह इस पीठ के पूज्य महंतद्वय की पुण्यतिथि के पूर्व सम्पन्न भी हुआ है।

अयोध्या से पधारे राम दिनेशाचार्य जी ने कहा कि आध्यात्म के दो पक्ष हैं। आन्तरिक व वाह्य। आन्तरिक अध्यात्म संयम व साधना है और वाह्य अध्यात्म सेवा और श्रम है। इस प्रकार के अध्यात्म की परिभाषा को चरितार्थ करने वाले पूज्य ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने जीवन भर इस पीठ के माध्यम से समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुंच कर बिना किसी भेद-भाव के सबके कल्याण की बात की। यह पीठ निरन्तर शिक्षा व सेवा, समरसता एवं सम्नवय की भावना को समाज व राष्ट्र के विकास के लिए समर्पित करने का प्रयास करता रहा है और आज भी उन्हीं लक्ष्यों व उद्देश्यों को लेकर सत्त प्रवाहमय है।

नैमिषारण्य से पधारे स्वामी विद्या चैतन्य जी ने कहा कि ये वो महापुरुष थे जिन्होंने इस धरा को छोड़कर स्थूल रूप से गये लेकिन सूक्ष्म रूप से अभी भी विद्यमान हैं। राम जन्म भूमि मन्दिर मुक्ति आन्दोलन में पूज्य संतो की जिस प्रकार की भूमिका रही आज मन्दिर निर्माण के समय भी वह भूमिका परिलक्षित हो रही है, यह पूरे भारत के लिए गर्व का क्षण है।

विभिन्न शैक्षिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों द्वारा श्रद्धांजलि के क्रम में भारत सरकार पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जी0एन0 सिंह, विश्व हिंदू परिषद से प्रांतीय संगठन मंत्री परमेश्वर कुमार जी, भारतीय जनता पार्टी से क्षेत्रीय अध्यक्ष डॉ धर्मेंद्र सिंह जी ,उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल से प्रांतीय मंत्री सत्य प्रकाश सिंह

मुन्ना, आई0एम0ए0 से प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ आर पी त्रिपाठी, सिंधी समाज से महामंत्री लक्ष्मण नारंग, सिख समाज से सरदार जगनैन सिंह नीटू, भारत सेवाश्रम से स्वामी निःश्रेयसानंद जी, उत्तर प्रदेश महिला आयोग से उपाध्यक्ष अंजू चैधरी ने श्रद्धांजलि दी।

आज विभिन्न पुस्तकों के लोकार्पण के क्रम में महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के पूर्व प्रधानाचार्य श्री रामजन्म सिंह द्वारा लिखित ‘‘मानस की प्रासंगिकता’’, ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं राष्टसंत अवेधनाथ जी महाराज की पुण्यतिथि को समर्पित वार्षिक पत्रिका ‘‘विमर्श’’ जिसके संपादक प्रो महेश कुमार शरण, डॉ. प्रदीप कुमार राव, डॉ. सुबोध कुमार मिश्र व मनीष कुमार त्रिपाठी है तथा श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य शशि कुमार यादव द्वारा लिखित राष्ट्रसंत अवेद्यनाथसहस्त्रनामार्चन पुस्तक का विमोचन मंचासीन पूज्य संत गण द्वारा किया गया।

सरस्वती वंदना व श्रद्धांजलि गीत महाराणा प्रताप बालिका इंटर कॉलेज रामदत्तपुर गोरखपुर की छात्राओं ने प्रस्तुत किया। वैदिक मंगलाचरण डॉ रंगनाथ त्रिपाठी, गोरक्षाष्टक पाठ सुजल तिवारी व गौरव तिवारी ,महंत अवेद्यनाथ स्त्रोत पाठ डॉ प्रांगेश मिश्र, अतिथियों का स्वागत महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो उदय प्रताप सिंह तथा संचालन डॉ. श्रीभगवान सिंह ने किया।

मंच पर अरैल प्रयागराज से स्वामी गोपाल जी महाराज, जूनागढ़ से महंत नारायण गिरी, स्वामी विश्वेश प्रपन्नाचार्य जी, महंत शेरनाथ जी, स्वामी नरसिंहदास जी, महंत अवधेशदास जी ,महंत मिथलेशनाथ जी उपस्थित रहे।

श्रद्धांजलि सभा में उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री डॉ महेंद्र सिंह जी, महापौर सीताराम जायसवाल, भाजपा महानगर अध्यक्ष राजेश गुप्ता, जिला अध्यक्ष युधिष्ठिर सिंह, अनूप किशोर अग्रवाल, ई पी के मल्ल, भिखारी प्रजापति, उपेंद्र पाठक, विधायकगण महेंद्र पाल सिंह, राघवेन्द्र सिंह, विपिन सिंह, फतेह बहादुर सिंह, संगीता यादव, डॉ. राधा मोहनदास अग्रवाल, विमलेश पासवान एवं

जनार्दन तिवारी, राहुल श्रीवास्तव, पुष्पदन्त जैन, अरूणेश शाही, डॉ. सी एम सिन्हा, रमेश सिंह, डॉ वेद प्रकाश पांडे ,अतुल सिंह, रामजीयावन मौर्य प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।